



किसान मजदूर संघर्ष के महानायक - सरदार तेजा सिंह सुतन्तर

एडवोकेट सिमरनजीत कौर गिल

आज के किसान संघर्ष में जहाँ 1907 के 'पगड़ी सँभाल जट्टा' आंदोलन हमारे जीत के जञ्जे को बल दे रहा है वहीं हमारे वो उन स्वतंत्रता सेनानी, जिन्हें हम आज के समय में बदल रहे इतिहास के चलते हौले हौले भुलाते जा रहे हैं, का जीवन आज भी हमारा पथ प्रदर्शन कर रहा है। इन्हीं महान नेताओं में से एक थे सरदार तेजा सिंह सुतन्तर। आप वो महान किसान कामगार नेता थे जिन्होंने अपनी पूरी उमर संघर्ष के नाम कर दी। इन्होंने जहाँ गदर लहर के योद्धाओं के रहनुमाई में देश की सेवा की और 'किरती किसान यूनियन' के नेता बनकर किसान कामगार संघर्षों की अगुवाई भी की।

सुतन्तर जी का जन्म पंजाब के जिला गुरदासपुर के गाँव अलूणा में 16 जुलाई 1901 को भाई किरपाल सिंह जी के घर हुआ। उनका पहला नाम समुंद सिंह रखा गया था। स्कूली शिक्षा पूरी करके उन्होंने खालसा कॉलेज अमृतसर में दाखिला लिया और 18 साल की उम्र तक सरदार अजीत सिंह के लैक्चरों से लेकर सूफ़ी अंबा प्रसाद और लाला हरदयाल के लेखों का गहन अध्ययन कर चुके थे। 13 अप्रैल 1919 के जलियांवाला बाग के निर्मम कांड से आहत होकर वो खालसा कॉलेज छोड़कर ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ विद्रोह में कूद पड़े। तब से लेकर आप देहांत तक खिलाफत आंदोलन से लेकर अकाली लहर और किरती किसान आंदोलन में आगे बढ़कर भाग लेते रहे।

सरदार तेजा सिंह सुतन्तर ने साल 1920 से 1925 तक गुरुद्वारा सुधार लहर में जी जान से काम किया। अपने पिता से प्रेरणा

लेकर उन्होंने अपने इलाके में सिख भाईचारे का एक स्वतंत्र (पंजाबी में सुतन्तर) जत्था तैयार किया जिसने 6 सितंबर 1921 को गुरदासपुर ज़िले के गाँव तेजा कलां, वीला तेजा के गुरद्वारा को चरित्रहीन महंतों के कब्जे से स्वतंत्र करवाया। तब से इस स्वतन्त्र जत्थे के अगुआ बनकर तेजा के गुरद्वारा के नाम से समुंद सिंह का नाम तेजा सिंह सुतन्तर हो गया।

एक धर्म प्रचारक होने से लेकर गदरी बाबाओं के साथ स्वतन्त्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाते हुए वो हमेशा एक किसान रहे और किसान मजदूरों के हक की मशाल जलाए रखने वाले तेजा सिंह 'लाल झंडा' पत्र के संपादक भी रहे। स्वतन्त्रता संग्राम को जंगी अंदाज़ से लड़ना सीखने के लिए उन्होंने 'आज़ाद बेग' नाम से तुर्की की फौज में भर्ती होकर सैनिक सिखलाई भी ली। इसके साथ वो बर्लिन के रास्ते यूरोपी देशों की यात्रा करते हुए अमेरिका जा पहुँचे और वहाँ के भारतीयों को क्रांति के लिए एकजुट किया। फिर आपने दक्षिणी अमेरिका का रुख किया और मैक्सिको, क्यूबा, पनामा, अर्जेंटीना, उरुग्वे और ब्राज़ील गए जहाँ इन्हें किसान महानायक सरदार अजीत सिंह (शहीद भगत सिंह के चाचा अजीत) के संग में और परिपक्व हुए। फिर आप अमेरिका में किरती किसान सभा के हेडक्वार्टर होते हुए आप भारत में सभा के दिशा निर्देशों को संघर्ष में तब्दील करने के लिए पंजाब लौट आए।

जनजागृति के लिए आप शिक्षा को बहुत प्रचारित करते थे और उसके लिए उन्होंने जनसामान्य के सहयोग से पाठशाला में 'किरती

कॉलेज' की नींव रखी जो आज के पंजाब के पटियाला जिला में स्थित है। उनके देहांत के बाद राज्य सरकार ने यह कॉलेज अपने अधिकार में ले लिया।

आप लाल कम्युनिस्ट पार्टी हिन्दू यूनियन के राष्ट्रीय कमेटी मेंबर और जनरल सेक्रेटरी भी रहे और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक मेंबर बने। 1937-45 तक पंजाब लेजिस्लेटिव असेंबली और 1964-69 तक पंजाब लेजिस्लेटिव काउंसिल में रहे सुतन्तर 1971 में आप पंजाब के संगरूर संसदीय क्षेत्र से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रत्याशी के सांसद बनकर भारतीय संसद में किसान मजदूर की आवाज़ बनकर दाखिल हुए। 12 अप्रैल 1973 को 72 वर्ष की उम्र में संसद में किसान हितों पर बहुत भावुकता से बोलते हुए उन्हें दिल का दौरा आया जिससे उनका देहांत हो गया।

किसान मजदूर संघर्षों के महानायकों में से एक सरदार तेजा सिंह सुतन्तर जी के शरीर की मृत्यु को चाहे आधी शताब्दी होने को है लेकिन किसान मजदूर का नारा बुलंद करती उनकी आवाज़ 2020 की किसान क्रांति में भी गूँज रही है और आगे भी गूँजती रहेगी। हमारे ऐसे बेमिसाल जननायक को हमारा प्रणाम है।



कौन हैं वे किसान संगठन जो कृषि क़ानूनों पर मोदी सरकार को दे रहे हैं समर्थन?

बसंत कुमार, न्यूज लॉर्ड // सरल रूप - सुचेतना सिंह

	मोदी सरकार के झूठे दावे	उनकी सचाई
1	केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र तोमर अलग-अलग 'किसान संगठनों' से कृषि कानूनों के समर्थन का दावा कर रहे हैं। उन्होंने ट्वीट करते हुए लिखा "लखनऊ उत्तर प्रदेश के "राष्ट्रीय युवा वाहिनी" से प्राप्त नए कृषि सुधार कानूनों के समर्थन में प्राप्त पत्र"।	इस संस्थान के प्रमुख उद्देश्य के रूप में 'गौशालाओं और अनाथ आश्रमों का निर्माण, गोरक्षा, भ्रष्टाचार उन्मूलन में सहभागिता' लिखा हुआ है और कृषि शब्द का जिक्र कहीं भी नहीं है।
2	कृषि क़ानूनों का समर्थन कर रहे 12 'किसान संगठनों' से मिला पत्र दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में किसान संगठनों के प्रमुखों ने उन्हें सौंपा।	इन 12 में से पांच संगठनों के प्रमुख भारतीय जनता पार्टी के सदस्य हैं। एक संगठन खुद को बीजेपी का सहयोगी संगठन होने दावा करता है।
3	राष्ट्रीय युवा वाहिनी के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित हरीश गौतम द्वारा लिखित समर्थन पत्र की शुरुआत में लिखा है, "राष्ट्रीय युवा वाहिनी (भारतीय जनता परिषद) सदैव ही भारतीय जनता पार्टी के सहयोग में रही है। आज राष्ट्रीय युवा वाहिनी किसान बिलों के समर्थन में सम्पूर्ण रूप से सरकार के साथ है।"	राष्ट्रीय युवा वाहिनी संगठन बीजेपी का सहयोगी संगठन है। यह बात उनके लेटर हेड पर भी लिखी हुई है।
4	राष्ट्रीय युवा वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष केडी शर्मा संगठन के खेती-किसानी से जुड़ाव के संबंध में पूछे गए सवाल पर उनका जवाब है, "हमारे संगठन में किसान प्रकोष्ठ भी है"।	किसान प्रकोष्ठ के प्रमुख के बारे में जानकारी मांगने पर शर्मा बताते हैं, "अभी तक इस पद पर कोई नहीं है। अलग से हमने किसी को भागीदारी नहीं दी है।"
5	केडी शर्मा कहते हैं, "दिल्ली में जो प्रदर्शन हो रहा है उसमें किसान तो हैं ही नहीं। किसानों को विपक्ष बरगला रहा है"।	जब उनसे पूछा गया की कृषि बिल के समर्थन में प्रदर्शन करने पर कितने किसान उनके साथ आ सकते हैं, इस सवाल के जवाब में शर्मा बताते हैं, "24 घंटे हमारे साथ एक हजार लोग ऐसे हैं जो कहीं भी प्रदर्शन करने आ सकते हैं। इसमें 250 किसान होंगे। 250 किसान हमारे साथ कभी भी आ सकते हैं।" केवल 250!
6	केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र तोमर ने राष्ट्रीय अन्नदाता यूनियन द्वारा कृषि बिलों के समर्थन में लिखा एक पत्र साझा किया। तोमर लिखते हैं "लखनऊ उत्तर प्रदेश के 'राष्ट्रीय अन्नदाता यूनियन' से नए कृषि सुधार कानूनों के समर्थन में प्राप्त पत्र। जिसमें कहा गया कि हम पूर्ण रूप से सरकार के साथ हैं।"	राष्ट्रीय अन्नदाता यूनियन के अध्यक्ष राम निवास यादव है जिनके इस समर्थन पत्र पर भी हस्ताक्षर हैं। राम निवास यादव बीजेपी के समान्य सदस्य नहीं हैं बल्कि उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में बीजेपी के सात साल तक जिला अध्यक्ष रह चुके हैं। वह साल 2019 में 22 दिसंबर तक इस पद पर थे, जिसके बाद से वे पार्टी के वरिष्ठ सदस्य के रूप में काम कर रहे हैं।
7	सरकार को समर्थन देने वाले संगठनों में हरियाणा के पलवल जिले के प्रगतिशील किसान क्लब और गुरुग्राम का उन्नतशील किसान क्लब भी शामिल है। प्रगतिशील किसान क्लब के लेटर हेड पर लिखे गए पत्र को साझा करते हुए कृषि मंत्री ने लिखा 'हरियाणा के "प्रगतिशील किसान क्लब" से प्राप्त नए कृषि सुधार कानूनों के समर्थन में प्राप्त पत्र'।	केंद्रीय कृषि मंत्री ने लिखा कि हरियाणा के प्रगतिशील किसान क्लब से उन्हें समर्थन मिला है लेकिन ऐसा नहीं है। यह समर्थन सिर्फ एक जिले के क्लब प्रमुख द्वारा दिया गया है। हिसार के क्लब प्रमुख राजेंद्र लम्बा और फतेहाबाद के बलबीर सिंह घरवाल से बात होने पर दोनों ने बताया कि "हम लोग इसके खिलाफ हैं। बलबीर सिंह घरवाल बताते हैं कि हमारे लोग तो दिल्ली के टिकरी बॉर्डर भी गए हैं। हम इसके खिलाफ हैं।"
8	सरकार के लिखे अपने पत्र में इन दोनों संगठनों ने एक वाक्य में अपना समर्थन देते हुए लिखा है, "हम सरकार द्वारा किसानों के हित में लागू हुए कृषि कानूनों का समर्थन करते हैं।"	पलवल के प्रगतिशील किसान क्लब के प्रमुख बिजेंद्र सिंह दलाल भारतीय जनता पार्टी से जुड़े तो नहीं हैं लेकिन उनके सोशल मीडिया पर बीजेपी नेताओं के साथ कई तस्वीरें नजर आती हैं। वहीं रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के साथ बैठे हैं, कहीं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के साथ। वहीं दूसरी तरह उन्नतशील किसान क्लब के गुरुग्राम प्रमुख मानसिंह यादव साल 2019 में इनेलो छोड़कर बीजेपी में शामिल हुए थे। एक तरफ हरियाणा के लाखों किसान सड़कों पर हैं। अपने संगठन के बारे में बताते हुए दलाल कहते हैं, "हम कोई किसान यूनियन नहीं हैं। हम प्रगतिशील किसान हैं। सरकार की तरफ से जो अच्छे काम होते हैं हम किसानों तक पहुंचाते हैं। हमारे संगठन से लगभग 500 किसान जुड़े हुए हैं।"
9	मानसिंह यादव ने कृषिमंत्री से मुलाकात के बाद मीडिया से कहते नजर आते हैं, "किसान एक ऐसी बिरादरी है जिसको कोई भी बहका सकता है। यदि इस अध्यादेश को पढ़ लें तो सारा रोग खत्म हो जाएगा। लोग बहकावे में आ ही सकते हैं। बाकी जो 70 साल से एक मामला चलता आ रहा है। हमारे अनाज की जो बोली लगी है वो खत्म होगी। कुछ ना कुछ बदलाव तो चाहिए। 70 साल से बदलाव नहीं हुआ तो हम गरीब के गरीब हैं. एकबार इसे देख लो।"	जब मानसिंह यादव से पूछा कि क्या उन्होंने तीन क़ानूनों को पढ़ा है तो इसका जवाब देते हुए उन्होंने कहा, "हम तो अनपढ़ आदमी हैं। हमने कानून की पेचीदगियों की समझ भी नहीं है। हमारे क्लब के अधिकांश सदस्यों का मानना है कि 70 साल से हम एक ढर्रे पर चल रहे थे। कोई बदलाव हुआ है तो उसे देखना चाहिए। क्या पता हमें यहां ग्राहक ज़्यादा मिल जाएं। एक बार इसका परिणाम तो देख लेते फिर तय करते।"
10	कृषि मंत्री ने अखिल भारतीय बंग परिषद' नाम के एक संस्थान द्वारा कृषि कानूनों के समर्थन में सरकार को पत्र को साझा करते हुए लिखा "अखिल भारतीय बंग परिषद' से नए कृषि सुधार कानूनों के समर्थन में प्राप्त पत्र। उन्होंने कहा कि ये कृषि कानून, किसानों की आर्थिक दशा को सुधारने में सहायक बनेंगे।	डेढ़ साल पहले बने 'अखिल भारतीय बंग परिषद' के मुख्य उद्देश्यों में खेती-किसानी शामिल नहीं है। इस संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिल्ली में रहने वाले अरुण मुखर्जी भारतीय जनता पार्टी के नेता के साथ-साथ आरएसएस के व्यापारिक संगठन स्वदेश जागरण मंच के राष्ट्रीय परिषद के सदस्य भी हैं। दिल्ली सरकार और बीजेपी के बीच एमसीडी के कथित 13000 करोड़ की मांग को लेकर बीजेपी द्वारा किए गए प्रदर्शन में मुखर्जी शामिल भी हुए हैं।
11	कृषि मंत्री ने इंडियन किसान यूनियन नाम के एक संगठन द्वारा कृषि कानूनों के समर्थन में सरकार को पत्र को साझा करते हुए लिखा "नई दिल्ली के "इंडियन किसान यूनियन" से प्राप्त नए कृषि सुधार कानूनों के समर्थन में प्राप्त पत्र। उन्होंने इन क़ानूनों को किसान हितैषी व किसानों को आत्मनिर्भर बनाने वाला बताया।"	इंडियन किसान यूनियन के प्रमुख 55 वर्षीय चौधरी राम कुमार वालिया हैं, जो उत्तराखंड के मान्यता प्राप्त राज्यमंत्री रह चुके हैं। लम्बे समय तक कांग्रेस में रहे वालिया अब भारतीय जनता पार्टी से जुड़ गए हैं।
12	भारतीय कृषक समाज से मिले समर्थन पत्र को साझा करते हुए कृषि मंत्री ने लिखा, "गाजियाबाद उत्तर प्रदेश के "भारतीय कृषक समाज" से प्राप्त नए कृषि सुधार कानूनों के समर्थन में पत्र। उन्होंने इस पत्र में कृषि कानूनों का समर्थन करते हुए इसे किसान हित में एक बड़ा साहसिक व ऐतिहासिक कदम बताया है"।	कृष्णवीर चौधरी भी बीजेपी के सदस्य हैं। वे खुद को समान्य कार्यकर्ता बताते हुए कहते हैं कि करोड़ों लोगों की तरह मैं भी बीजेपी का एक सदस्य हूँ। भारत सरकार को कृषि बिलों पर समर्थन देने के साथ-साथ इनकी भूमिका अन्य कई संगठनों से समर्थन दिलाने में भी नजर आती है।